International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 01-07-2022, Accepted: 15-07-2022, Published: 28-07-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 52-54

प्रभा खेतान की कविताः अस्तित्व एवं अस्मिता की खोज में नारी

पूनम आर्या
सहायक प्रध्यापक, हिन्दी, श्री राम सिंह धौनी राजकीय महाविद्यालय, जैंती, अल्मोड़ा, उत्तराखंड, भारत

सारांश
हिन्दी साहित्य की बहुचर्चित लेखिका प्रभा खेतान एक श्रेष्ठ महिला लेखिका है । उनका अधिकांश साहित्य, समाज और स्वयं के जीवन में आये अनुभवों की अभिव्यक्ति है। उन्होंने समाज में जो भी देखा, जो भी महसूस किया उसे , अपनी लेखनी के माध्यम से उजागर किया। प्रभा जी की जितनी लेखनी की कलम गद्य साहित्य में चली, उतनी पद्य साहित्य में नहीं, किन्तु उनके लेखन का पदार्पण हिन्दी साहित्य में कविता के माध्यम से ही हुआ हैं। प्रभा जी ने नारी अस्तित्व एवं अस्मिता की खोज में नारी की पीड़ाओं को जितना अपनी मां के जीवन से ग्रहण किया है उतना तो शायद पुस्तकों से भी नही किया । प्रभा जी ने जब भी समाज को देखा तब–तब उन्होंने सामाजिक असमानताओं के चलते नारी को चारदीवारी में कैद ही पाया, उनकी नजर में नारी सिर्फ एक कठपुतली से ज्यादा ओर कुछ भी नही थी। इन सभी कारणों से प्रभा जी की नारीवादी सोच मजबूत होती चली गयी, और अपनी इसी सोच के कारण उन्होंने अपनी पहली कविता प्रकाशित की। जिसमें उन्होंने कविता के माध्यम से नारी जीवन के अस्तित्व और अस्मिता की खोज की है और नारी को अपने अस्तित्व के प्रति सचेष्ट भी किया हैं। सामाज में नारी की अवहेलना को अपने आगोश में समेटते हुए, अपनी अधिकांश कविताओं में नारी के अस्तित्व को कायम करने के लिए, और भविष्य में नारी को एक नई ऊंचाइयों तक पहुचाने कि लिए प्रभा जी ने जी–तोड़ मेहनत की है। यही कारण है कि, प्रभा जी ने अपनी कविता के माध्यम से युगों से दमित, शोषित नारी को विषम परिस्थितियों में स्वंय लड़ना सिखाया। इनके अधिकांश काव्य संग्रह में नारी सामाजिक बेंड़ियों को तोड़ती हुई, अपने अस्तित्व और अस्मिता की खोज में निकल पड़ी हैं। वह समाज को यह भी याद दिलाना चाहती है कि उसमें अथाह समुद्र सा आवेग भी और सृष्टि को सृजन करने वाली सृजनधर्मिता भी हैं। वह पुरूष से अपने अस्तित्व की अलग पहचान बनाने के लिए इस धरातल में अडिग खड़ी है।

मूल शब्दः पितृसत्तात्मकता, मौलिक, अस्तित्व, संघर्ष, खोज, आत्मनिर्भरता आदि।

प्रस्तावना
प्रभा जी का जब पहला काव्य संग्रह 'अपरिचित उजाले' आया । उसमें उन्होंने अपने प्रारम्भिक जीवन की समस्याओं और, अपने अस्तित्व के लिए विषम परिस्थितियों से जूझ रही थ, जिसकी छाप उनके अधिकांश काव्य संग्रह में दिखायी देती हैं। इस काव्य संग्रह में प्रभा जी नारी जीवन की असफलताओं और सफलताओं की कसक को गहरे दर्द के रूप में अभिव्यक्त किया हैं। इस काव्य संग्रह में कवयित्री ने ये बताने का प्रयास किया है कि , प्यार का मार्ग कितना भी कठिन क्यों न हो वह हृदय में प्रेम का बीज अंकुरित करके एक–दूसरे के प्रति आकर्षण पैदा करता है। जिसमें यौवन की प्रकाष्ठा में कदम रखने वाली युवती जीवन में आने वाली सभी कठिनाईयों से अनजान होती हैं। उसे लगता है कि सारा जहां उसका है ,सारा आसमां उसका है–

''सहसा मुझसे निकलकर
एक लड़की छलांग लगा जाती
लहरों के बीच,
तैरती चली जाती दूर आसमानों तक'' [1]

इस 'काव्य संग्रह' में युवती जीवन की विसंगतियों से बिल्कुल भी परिचित नही होती हैं। यह काव्य संग्रह प्रेम की महत्ता के साथ जीवन की विविधता को लिए हुए हैं। इस संग्रह में कवयित्री ने नारी–जीवन की प्रेम की प्रकाष्ठा को अभिव्यक्त किया हैं। साथ ही कवयित्री ने यह भी दर्शाने का प्रयास किया है कि, वह ऐसे प्यार को नही स्वीकाराना चाहती है। जो रात के अंधेरे में उसे अपनाता है, और दिन के उजाले में समाज की मान्यताओं ,परम्पराओं के कारण उसे ढुकरा देता है। इसलिए नारी अपनी अस्मिता के लिए उस प्रेम को संपूर्ण रूप से प्राप्त करना चाहती हैं। और समाज में निडरता से अपने प्यार को स्वीकारना चाहती हैं और अपनी अस्मिता की खोज को समाप्त कर देना चाहती है और इस संपूर्ण समाज से कह देना चाहती है कि,–

''तुम जानते हो
मैंने तुम्हें प्यार किया है
साहस और निडरता से
मैं उन सबके सामने खड़ी हूं

जिनकी आंखे
हमारे संबंधों पर प्रश्नवाचक
मक्खियों की तरह मंडराती हैं।'' [2]

प्राचीन काल से स्त्री ने सदैव अपने अस्तित्व की लड़ाई स्वयं लड़ी है लेकिन, जब उससे जुड़े रिश्तों के मान –सम्मान और खुशी की बात आती है तो वह, उनकी खुशी के लिए उनके समक्ष अपने अस्तित्व एवं अपनी खुशी को समर्पित कर देती है। इन रिश्तों को बचाने के लिए वह अपनी रक्त की एक बूंद को भी न्यौछावर कर देती है। सदियों से नारी ने समाज में अपने अस्तित्व का बलिदान किया है, किन्तु आधुनिक युग की कवयित्री प्रभा खेतान नारी को अपने अस्तित्व की पहचान की खोज स्वयं करने का आवहन करती नजर आती हैं। प्रभा खेतान की 'कृष्णधर्मा मैं' कविता में नारी की अपनी स्थिति से उबरने और पुरूष की भांति स्वतंत्रतापूर्वक जीवन जीने की छटपटाहट प्रबलता से उभरी है। पुरूष ने स्त्री को सदैव अपने इशारों पर नाचने वाली कठपुतली से ज्यादा कुछ भी नही समझा है, उसने स्त्री को कभी देवी के रूप में पूजा है; तो कभी अबला कहकर उसके अस्तित्व को ही मिटा दिया हैं। हर प्रकार से उसने नारी के अस्तित्व को उभरने से रोका हैं। उसकी यही घुटन, यही छटपटाहट कविता 'कृष्णधर्मा मैं' में कृष्ण को पुकार उठती हैं–

''मत कहो, मुझे सिर्फ माया
ओ नियंता! मत कहो मैं केवल छाया हूं
किसी भी क्षण मिट जाने को विवश
यह मेरा आत्म है
एकल आत्म खोजता–गढ़ता हुआ
इतिहास की घटनाओं में
अपनी पहचान । '' [3]

'कृष्णधर्मा मैं' कविता में नारी स्वयं की पहचान बनाती नजर आती है उसके सामने मैं कौन का सवाल अब खड़ा नही उठता हैं। उसे अपने नारीत्व पर गर्व है। वह स्वयं को कृष्ण के रूप मे आभास करती नजर आती है जो नगण्य नही है, जिसका अपना अस्तित्व है । वह दौपदी की तरह नही बनना चाहती है वह दया की भीख नही मांगना चाहती है अपनी लाज बचाने के लिए, वह स्वंय अपने अस्तित्व और स्वाभिमान की रक्षा करने में समक्ष हैं। अब उसे अपनी पहचान बनाने कि लिए किसी पुरूष की आवश्यकता नही है। उसमें अब इतनी क्षमता है कि वह अपनी पहचान स्वयं बना सकती हैं। प्रभा जी का यह काव्य संग्रह स्त्री को कमजोर नही बनाता है बल्कि उसे पुरूष के समकक्ष खड़ा होना सिखाता हैं। प्रभा जी का मानना है कि, पुरूष वास्तव में जड़ विहीन है, क्योंकि जन्म से ही वह स्त्री के अस्तित्व पर निर्भर रहता हैं कभी मां के रूप में तो, कभी पत्नी के रूप में। इसलिए नारी का अस्तित्व अधिक महत्ता रखता है। 'कृष्णधर्मा मैं' कविता में नारी स्वयं बोल उठती हैं–

''आत्म हूं मैं अब भी
अरे ओ परमात्मन्
भोगती रही हूं मैं
सोते–जागते
हंसते–रोते
अस्तित्व के हर क्षण को। '' [4]

प्रभा जी का अंतिम काव्य संग्रह अहल्या एक महत्वपूर्ण काव्य संग्रह हैं। इसमें प्रभा जी ने अहल्या के पत्थर बनने और राम जी के चरण उस पत्थर पर पड़नें से उसके जीवत होने की पौराणिक कथा को नए रूपों में प्रस्तुत किया हैं। अहल्या जैसी ऐसी कई नारी है जो आज भी अपने उद्धार के लिए पुरूष की प्रतीक्षा करती है । सनातन काल से नारी के रूप में अहल्या जड़–निष्क्रिय होकर पुरूष द्वारा दिये गयी प्रताड़ना को झेलती रही। इस कविता के माध्यम से कवयित्री नारी मन पर जमी दर्द की काई को उतारकर उसे अपने अस्तित्व को पहचानने की क्षमता प्रदान करने के लिए उसे अंधेरे से उजाले की ओर एवं स्वयं अपना उद्धार करने का संदेश देती हुई कहती है–

''एक अनंत एहसास
समर्पिता मैं
पुकार रही
ओ, मेरी अस्मिता !
मेरी आत्मजा!
क्हां भटक गयी तुम
अंधेरी अवचेतन गुफाओं में ?'' [5]

युगो से एक सांचे में कैद अपनी पहचान और अपने अस्तित्व को भुलाकर स्त्री सदैव अपनी आत्म पीड़ा को दबाये पुरूष द्वारा शोषित होती आई हैं। प्रभा जी ने नारी के अन्तर्मन को पहचाना है और नारी को जाग्रत करने के लिए उसे अपनी कविता के माध्यम से यह संदेश भी दिया है कि, तुम अपने आप को पहचानों, अपने अन्तर्मन को टटोलो । तुम नही

जानती की तुम्हारे अंदर विश्व को जीतने की कला है, बस एक बार अपने आप को इन परम्परागत बेड़ियों से मुक्त करके तो देखो , उठो! और अपने स्व–अस्तित्व का स्वयं निर्माण करो–

'' उठो!
भूल जाओ, दर्द का इतिहास !
लगातार पत्थरों का व्याघात
तुमने कभी धरती की छाती पर
टेढ़े–मेढ़े अक्षरों से टांका था
अपना अस्तित्व ।'' [6]

निष्कर्ष

हिन्दी साहित्य में जब नारी के अस्तित्व और अस्मिता को धरातल में लाने के लिए जब नारी विमर्श प्रारम्भ होने लगा था। उससे पहले ही प्रभा खेतान जी ने साहित्य जगत में कविता के माध्यम से प्रवेश कर लिया था। इनकी अधिकांश कविता में नारी–जीवन की त्रासदी को अलग–अलग संदर्भो में अभिव्यक्त किया गया हैं। आज के युग की नारी शोषण के विरोध आवाज उठाती हुई, पुरूष के बराबर हर क्षेत्र में खड़ी नजर आती है। प्रभा खेतान जी की कविताओं का अध्ययन करने से यह सिद्ध होता है कि, पुरातनकाल की नारी और आज की नारी में शोषित, कुंठित, परतंत्र नारी की जो झलक सनातन काल में देखने को मिलती थी। वह आज की नारी में देखने को नही मिलती है। आज की नारी अपने अधिकारों प्रति सजग हो गयी हैं; और उसे अपने अस्तित्व के प्रति सजग करने में भारतिय कवयित्री और लेखिकाओं ने समय –समय पर अपनी रचनाओं के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। साथ ही पुरूषजाति को यह समझाने की भी कोशिश की है कि, उसे अब नारी को भी समान अधिकार देने होगे, तभी हम एक बेहतर समाज की परिकल्पना कर सकते हैं। और नारी को भी समाज में अपनी स्थिति को; ओर बेहतर बनाने के लिए सदैव पुरजोर कोशिश करती रहनी होगी; तभी वह समाज में अपने अस्तित्व को कायम रखने में सफल हो पायेगी।

संदर्भ सूची

1. प्रभा खेतान–अपरिचित उजाले–पृष्ठ संख्या–69
2. प्रभा खेतान–अपरिचित उजाले–पृष्ठ संख्या–10
3. प्रभा खेतान–'कृष्णधर्मा मैं'–पृष्ठ संख्या–19
4. प्रभा खेतान–'कृष्णधर्मा मैं'–पृष्ठ संख्या–19
5. प्रभा खेतान–'अहल्या'–पृष्ठ संख्या–23
6. प्रभा खेतान–'अहल्या'–पृष्ठ संख्या–44